

आदिकाल :-

1. साम्राज्यदाता की प्रशंसा एवं राष्ट्रीय भावना का अभाव -
2. संदिग्ध रचनाओं का प्राचुर्य -
3. ऐतिहासिकता का अभाव -
4. भावान्मेष की प्रधानता -
5. युद्धों का यथार्थ वर्णन -
6. वीर और शृंगार रस -
7. प्रकृति चित्रण -
8. रासों ग्रन्थ -
9. काव्य के द्वैरूप
10. जनजीवन से सम्पर्क नहीं -
11. छन्दों के विविध प्रयोग -
12. दिंगल और पिंगल भाषाएँ -
निष्कर्ष -

भक्तिकाल :-

1. नाम की महत्ता -
2. गुरु महिमा -
3. भक्तिभावना -
4. अहंकार का त्याग -
5. समन्वय की भावना -
6. ब्रह्मजन हिताय -
7. लोकभाषा की प्रधानता -
8. वीर काव्यों की रचना -
9. प्रबन्धात्मक चरित काव्य -
10. नीति काव्य -
11. गद्यात्मक साहित्य -
12. शीति काव्य -

वसुधैव कुटुम्बकम्

शीतिकाल :-

1. लक्षणग्रन्थ निरूपण -
2. शृंगारिकता -
3. अलंकारिकता
4. भक्ति एवं वैराग्य निरूपण -
5. भुक्तक काव्य -
6. प्रजभाषा की प्रधानता -
7. वीररसपूर्ण काव्य -
8. आलंबन रूप में प्रकृति चित्रण -
9. नारी निरूपण -
10. पराश्रय की भावना -

भारतेन्दु युग

- (i) देश भक्ति और राज्य भक्ति -
- (ii) जन जीवन का चित्रण -
- (iii) प्रकृति चित्रण -
- (iv) इतिहासक की प्रवृत्ति -
- (v) भाषा -
- (vi) प्रज भाषा के परम्परागत ध्वनि एवं लोक ध्वनि का प्रयोग -
- निष्कर्ष -

द्विवेदी युग

- (i) समाज सुधार -
- (ii) सामान्य जन का चित्रण -
- (iii) मानवतावादी दृष्टिकोण
- (iv) देश भक्ति
- (v) अनुवाद की प्रवृत्ति -
- (vi) इतिहासकता एवं गद्यांश

सलराधुमाल

(vii) भाषा एवं शुद्ध व्याकरण -

(viii) प्रकृति चित्रण -